पंचम अध्याय

विवेच्य काव्य का वैचारिक पक्ष

पंचम अध्याय
"विवेच्य काव्य का वैचारिक पक्ष"

प्रस्तावना :

रचनाकार रचना का सृजन करते समय उसमें मौलिक विचारों को स्थान देता है। उनके विचारों के कारण ही वह साहित्य सशक्त बनता है। अत: हम 'विचार' इस शब्द की संकल्पना निम्नलिखित प्रकार से देखते हैं।

विचार :

1. श्यामसुंदरदास जी ने 'हिंदी शब्द सागर' में लिखा है कि, "1. वह जो कुछ मन से सोचा जाए अथवा सोचकर निश्चित किया जाए। 2. वह बात जो मन में उत्पन्न हो। मन में उठनेवाली कोई बात। भावना। खयाल"[1]
2. डॉ. हरदेव बाहरी जी ने लिखा है कि, "1.मन ही मन तर्क वितर्क करते हुए सोचना समझना। 2. आगा-पीछा निश्चित करना। 3.ख्याल 4.फैसले के लिए मुकादमे की सुनवाई। 5. वाद विवाद 6.संदेह"[2]
3. 'प्रामाणिक हिंदी कोश' में रामचंद्र वर्मा जी ने लिखा है कि, "1. मन में सोचा या सोचकर निश्चित किया हुआ तत्त्व या बात। संकल्प। 2.मन में उत्पन्न होनेवाली बात। भावना। खयाल 3. किसी बात के सब अंग देखना या सोचना समझना।"[3]

'विचार' इस शब्द से 'वैचारिक' इस शब्द का निर्माण हुआ है। इसका अर्थ है - विचार संबंधी या विचार से संबंध रखनेवाला।

विचार साहित्यकार के मानसिक जगत की गतिशील धारा होती है। इसके माध्यम से साहित्यकार वर्तमान समस्याओं को हल करने का कार्य करता है। इसी प्रकार महाकवि रामदास निमेश जी ने 'भीमकथाअमृतम्' महाकाव्य में विभिन्न प्रकार के विचारों को

---

[1]. संपा. श्यामसुंदरदास -हिंदी शब्दसागर नवाँ भाग, पृ.4458
[2]. डॉ. हरदेव बाहरी - राजपाल हिंदी शब्दसागर, पृ. 743
[3]. संपा. रामचंद्र वर्मा - प्रामाणिक हिंदी कोश, पृ.1014

स्थान दिया है। प्रस्तुत महाकाव्य में सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक, और शैक्षिक विचारों का वर्णन मिलता है। अत: हम विवेच्य महाकाव्य में वर्णित महाकवि निमेश जी के सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक, शैक्षिक विचारों की जानकारी निम्नलिखित प्रकार से देखते हैं।

5.1 सामाजिक विचार :

'समाज' इस शब्द की व्युत्पत्ति लैटिन भाषा के 'Scoieties' इस धातु से हुई है, जिसका अर्थ है-समाज, मंडल और संस्था। 'समाज' इस शब्द की संकल्पना स्पष्ट करते हुए भाषा शब्द कोशकार रमाशंकर शुक्ल जी लिखते है कि, "समूह, सभा, समिती, दल, वृंद, समुदाय, संस्था, एकस्थान निवासी तथा समान विचार वाले लोगों का समूह तथा विशेष उद्देश्य या कार्य के लिए अनेक व्यक्तियों की बनाई या स्थापित हुई सभा"[1] को 'समाज' कहा जाता है।

प्रसिद्ध समाजशास्त्री मैकाइव्हर और पेज ने समाज की परिभाषा स्पष्ट करते हुए कहा है कि, "समाज कार्यप्रणालियों और चलनों की अधिकार सत्ता और पारस्पारिक सहायता की अनेक समूह व श्रेणियों की तथा मानव व्यवहार के नियंत्रणों की एक व्यवस्था है, इस निरंतर परिवर्तनशील व जटिल व्यवस्था को समाज कहते है।"[2] 'समाज' इस शब्द को 'ईक' इस प्रत्यय के जुड़ जाने से 'सामाजिक' शब्द का निर्माण होता है।

अत: हम विवेच्य महाकाव्य में महाकवि निमेश जी के सामाजिक विचारों को निम्नलिखित प्रकार से देखते हैं।

5.1.1 जातिव्यवस्था संबंधी विचार :

भारत की समाज व्यवस्था में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इन चार वर्णों का निर्माण हुआ है। इनमें से शूद्र लोगों को सबसे हीन, कनिष्ठ माना गया है। वर्ण के कारण ही जातिव्यवस्था का निर्माण हुआ है। जातिव्यवस्था के वारे में एच.एल.दुसाध जी कहते है कि, "कर्म व वर्ण शुद्धता के माध्यम से जाति, वर्णव्यवस्था के अंतर्गत मानवाधिकारों की विराट

---

[1]. रमाशंकर शुक्ल-भाषा शब्द कोश, पृ.1522

[2]. मैकाइव्हर और पेज अनु. विश्ववैश्वरया - समाज : एक परिचयात्मक विश्लेपण, पृ.5

उपेक्षा हुई है। कर्म-संकरता से हिंदू समाज को मुक्त रखने के लिए जन्म सूत्र में प्रत्येक जाति को, उसके निर्दिष्ट पेशे से बंध कर रह जाना पड़ता है।"[1] इस जाति व्यवस्था के कारण शूद्रों का शोषण होता रहा है। इसी वजह से मनुष्य-मनुष्य में दरारे पैदा हो गई है। इसका लाभ उठाकर उच्च वर्ग के लोग शूद्रों को गुलाम वनाकर उनका शोषण कर रहे है। इसी कारण उनकी स्थिति पशु के समान हो गई है। इसका वर्णन महाकवि निमेश जी इस प्रकार करते हैं।

"हिंदू हैं पर नीच कहावैं । कुआ, बावड़ी नीर न पावे ||
धरम व्यवस्था अति दुखदाई । मंदिर प्रवेश की उन्हें मनाई ||
शिक्षा से वंचितकरि राखा। का करि तरक बढ़ावहु शाखा ||"[2]

इसके साथ ही इस व्यवस्था का निर्मूलन करने की सलाह देते हुए महाकवि निमेश जी अंर्तजातीय भोज तथा विवाह करने की सलाह देते हैं। जैसे-

"अन्तर्जाति भोज करवाये। अन्तर्जाति विवाह कराये ||
जातिवाद है शत्रु हमारा। नहीं इस्लाम, बिटेन बिचारा ||
जाति पांत में फूट निहारी | दासी हो गई अवानि हमारी ||
जाति हमारे लिए पाप है | एक राष्ट्र के लिए शाप है ||"[3]

उपर्युक्त कथन के आधार पर कहा जा सकता है कि, महाकवि निमेश जी ने भारतीय समाज में वर्णित जातिव्यवस्था का निर्मूलन करने की वात कही है।

5.1.2 वर्णव्यवस्था संबंधी विचार :

वर्णव्यवस्था का प्रचलन मानव के द्वारा हुआ है। इस व्यवस्था का वर्णन 'मनुस्मृति' इस ग्रंथ में मिलता है। इस ग्रंथ का सृजन मनु ने किया है। तत्कालीन युग में मनु को समाज में श्रेष्ठ माना जाता था। उसके द्वारा वर्णित वर्णव्यवस्था के वारे में ए.एन. भारद्वाज कहते है कि, "मनु ने समाज को किसी मर्यादा की इकाई में संगठित करने का प्रयास किया है और इसे ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र के नाम से चार भागों में कर्म-सिद्धांत के

---

[1]. एच.एल. दुसाध - हिंदू आरक्षण और बहुजन समाज, पृ.46
[2]. रामदास निमेश - भीमकथा अमृतम्, पृ.131
[3]. वही, पृ.229

आधार पर विभक्त किया।"[1] महाकवि निमेश जी विवेच्य महाकाव्य में वर्णव्यवस्था संबंधी विचार प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि-

"कपट चाल चलि राज छिनाये | और द्रविण जनदास वनायें ||
आर्य अनार्य की सीमा वांधी | वर्ण व्यवस्था के अपराठी ||
चार वर्ण में बंटा समाजा |वामन, पुरोहित, क्षत्रि राजा ||"[2]

इन चार वर्णों में से उच्च वर्ग के लोग अछूतों का शोषण करते थे। यह वर्ग शिक्षित होने के कारण उन्होंने अन्य वर्गों का विभाजन किया है। इसका वर्णन महाकवि निमेश जी इस प्रकार करते हैं।

"समाज व्यवस्था का विश्लेषण | मानव से मानव का शोषण ||
मानवकृत है वर्ण व्यवस्था | नहीं ईशकृत वर्ण व्यवस्था ||
शिक्षित वर्ण को श्रेष्ठ मानकर | दिया अशिक्षित नीच बनाकर ||
तीन वर्ग में बांटा उनको | क्षत्री, वैश्य, शूद्र कर उनको ||"[3]

भारतीय समाज में वर्णव्यवस्था के कारण दलितों को स्पर्श करना पाप माना जाता था। डॉ. अम्बेडकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने के बाद बडौदा के राजा ने उनको अपने राज्य में रक्षा सचिव के पद पर नौकरी दी थी। लेकिन वहा पर वे दलित जाति के होने के कारण उनका अपमान होता रहा। इसका वर्णन महाकवि ने इस प्रकार किया है -

"फाइल कागज, कुर्सी टेबल | छुये भीम के, रहै न निर्मल ||
सर्पदंश सा लगै भयानक | नर पंगुव शुचि अशुचि भयानक ||
कहैं सवर्ण नीच चपरासी | हा! सवर्ण की वुद्धि विनाशी ||
दुष्कर हुआ कार्य निष्पादन | नहीं आवास मिले नहीं भोजन ||
कुटिल प्रताडन लखि स्वदेश में | घोर अमानुषपन स्वदेश में ||
महाविवश मैं हिंदू जनमा | अति संताप उगा मम मन मा ||"[4]

---

[1]. ए.एन. भारद्वाज - अस्पृश्यता एवं मानवता, पृ.27
[2]. रामदास निमेश - भीमकथाअमृतम्, पृ.10
[3]. वही, पृ.46
[4]. वही, पृ.52

इसके आधार पर कहा जा सकता है कि महाकवि निमेश जी ने भारतीय हिंदू समाज व्यवस्था के कारण दलितों की हुई दयनीय स्थिति का वर्णन किया है।

5.1.3 छुआछूत प्रथा संबंधी विचार :

भारत देश में प्राचीन काल से छुआछूत प्रथा का प्रचलन चलता आ रहा है। इस प्रथा के कारण सवर्ण लोग दलितों के साथ अमानवीय व्यवहार करते थे। डॉ.भदंत आनंद कौसल्यायन जी पेशवाओं के काल में समाज में वर्णित छुआछूत प्रथा के बारे में कहते हैं कि, "पेशवाओं के शासन काल में महाराष्ट्र में यदि कोई सवर्णी हिंदू सड़कपर चल रहा हो, तो अछूत को वहाँ चलने की आज्ञा नहीं थी, ताकि कहीं उसकी छाया से वह हिंदू भ्रष्ट न हो जाए। अछूत को अपनी कलाई पर या गले में निशानी के तौरपर एक काला डोरा बाँधना पड़ता था, ताकि (उँची जात वाला) हिंदू उसे भूल से स्पर्श न कर बैठे।"[1] इससे हमें दलितों की स्थिति का पता चलता हैं। इसके साथ दलितों को मंदिर में प्रवेश करना भी अशुभ माना जाता था। इसका वर्णन महाकवि निमेश जी इस प्रकार करते है -

"रचकर अशुचि विधान विप्र ने, शूद्र बहिष्कृत किया अपरिमित।
देवालय, मंदिर के अन्दर, कर दीना था प्रवेश वर्जित ॥
घट घट व्यापी राम सुधाम, कीना क्यों विप्रो ने सीमित।
राम नजर में हुआ अछूत अशुचि जन, हीन असीमित ॥"[2]

डॉ. अम्बेडकर जी को स्कूल में पढ़ते समय छुआछूत प्रथा के कारण अपमानीत होना पड़ा था। इसका वर्णन महाकवि इस प्रकार करते हैं -

"आए भीम बोर्ड नियराई। सब बच्चों ने हांक लगाई ॥
हो अशुदध हमारा भोजन। अगर छुएगा इसको हरिजन ॥
उठे सभी बालक घवराये। उठा तुरंत भोजन सव लाए ॥
एल्पिन्स्टन के हिंदू शिक्षक। रहे देखते मूक निरीक्षक ॥"[3]

---

[1]. डॉ.भदंत आनंद कौसल्यायन - यदि वाबा न होते !पृ. 33-34
[2]. रामदास निमेश - भीमकथाअमृतम्, पृ.98
[3] वही, पृ. 26

इस प्रकार महाकवि निमेश जी ने विवेच्य महाकाव्य में छुआछूत प्रथा संबंधी विचार प्रस्तुत किए हैं।

5.1.4 नारी संबंधी विचार :

भारतीय समाज व्यवस्था में नारी का सामाजिक और आर्थिक स्तर पर शोषण होता रहा है। इसके कारण नारी पर अनेक प्रकार के जुल्म होते रहते थे। इसी वजह से नारी का समाज में स्वतंत्र रूप से अस्तित्त्व निर्माण नहीं हो सका। भारतीय समाज व्यवस्था कि, "हिंदू संस्कृति में पत्नी को अर्धांगिनी, गृहस्वामिनी एवं सन्माननीया माना गया है, परंतु इस युग में उनकी स्थिति अत्यंत दयनीय है। नारी सेवा करनेवाली मात्र दासी है। उसका अपने घर पर कोई अधिकार नहीं।"[1] नारी की इस स्थिति का वर्णन महाकवि निमेश जी इस प्रकार करते हैं -

"सुता पिता के, नारी पति के, माँ बेटा के आदेश निभाये।
पिता, पति की आज्ञा के बिन, घर से नारी न कदम बढ़ाये॥
विधवा माँ पर हिंदू सज्जन, कटु नैतिक प्रतिबंध लगायें।
मनुस्मृति से तथ्य अनेको, बाबा जू ने लिख बतलाये॥"[2]

भारत की प्राचीन समाज व्यवस्था में बाल विवाह और सती प्रथा संबंधी विचार महाकवि ने इस प्रकार प्रस्तुत किए हैं -

"अन्य लोग तो निज पुत्री को बाल्यकाल में देते व्याही।
पति के मरते पत्नी को भी, जिन्दा देते थे जलवाय॥"[3]

तथा

"नारी वर्ग समर्थन कीना। भीमराव उद्धारक चीना॥
बूढ़े संग बाला बंध जाये। असमय विधवा यौवन जाये॥
उपजै विकृति समाज हमारी। होय तिरस्कृत केवल नारी॥

---

[1]. घनश्याम भुतड़ा - समकालीन कहानियों में नारी के विविध रूप, पृ.43
[2]. रामदास निमेश - भीमकथाअमृतम्, पृ.334
[3]. वही, पृ.31

विधवा व्याह व्यवस्था होई | व्यभिचारी तब लोग न होई ॥"[1]

भारतीय संस्कृति पुरूष प्रधान होने के कारण समाज में नारी पर अनेक प्रकार के अन्याय, अत्याचार होते रहे हैं। इसका वर्णन विवेच्य महाकाव्य में महाकवि निमेश जी ने निम्नलिखित प्रकार से किया है।

"नारी आजे पाँव की जूति | बाज रही पुरूषों की तूती ॥
नारी का शोषण होता है | देखि हृदय को दुख होता है ॥
हिंदू जन विष बेल बतायें | धर्मग्रंथ सदियों से गाये ॥
बिन त्रुटि नारी पीटी जाये | पुन: पुरूष की दास कहायें ॥
पुरूष प्रधान समाज बनाया | नारी का अपमान सवाया ॥"[2]

उपर्युक्त चित्रण के आधार पर कहा जा सकता है कि, महाकवि निमेश जी ने विवेच्य महाकाव्य में भारतीय समाज व्यवस्था में नारी की दयनीय स्थिति का तथा उसपर होनेवाले अत्याचारों का वर्णन किया है।

5.1.5 सामाजिक विषमता संबंधी विचार :

भारतीय समाज व्यवस्था में वर्णव्यवस्था के कारण समाज के लोगों का चार वर्गों में विभाजन हुआ है। इस वर्ग के लोगों में से ब्राह्मण लोग शिक्षित थे, क्षत्रिय लोग रक्षा करने का काम करते थे, वैश्य व्यापार करते थे, और शूद्र लोग इन तीन वर्गों के लोगों की सेवा करते थे। इसके कारण समाज में असमानता का निर्माण हुआ था। इस वर्णव्यवस्था में से शूद्र लोग कितने भी विद्वान या बुद्धिमान क्यों न हो उन्हें उस वर्गतक ही सीमित रखा जाता था। इसी कारण समाज में विषमता फैल गई। समाज की इस विषमता का वर्णन महाकवि निमेश जी इस प्रकार प्रस्तुत करत हैं -

"सदियों से जो चलती आई | मनु संहिता अति दुखदाई ॥
जिसने मानव पशु बनाया | घृणा द्वेश का विष बिखराया ॥
जाति ईश्वर कृत बतलाई | जन्मजात कह जाति बताई ॥

---

[1]. रामदास निमेश - भीमकथाअमृतम्, पृ. 327
[2]. वही, पृ. 327

सामाजिक प्रतिवंध लगाये | नीच जाति कह दास बनाये ||

धन संपत्ति का संग्रह करना | विद्या अरू ज्ञानार्जन करना ||

शूद्रों का अपराध वताया | पाप पुण्य का भय दिखलाया ||"[1]

इसके साथ ही सामाजिक विषमता के कारण दलितों को गुण्ड़े लुटते थे। इसका वर्णन महाकवि निमेश जी इस प्रकार करते हैं -

"महू महि की घटना यह थी | प्रजा देश की थी दुख सहती ||

श्रम करि जनता अन्न उगाए | सामंती गुण्ड़े लूट मचाए ||

अन्न छीन फिर टैक्स लगाए | दीन किसान तड़प रह जाए ||

भूखे पेट बेगार करै वे | धनिकों के भण्ड़ार भरै वे ||"[2]

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि, सामाजिक विषमता के आधार पर समाज की प्रगति नहीं होती। सामाजिक विषमता के कारण सवर्ण लोग निम्न जाति तथा दलित लोगों का शोषण करते हैं।

5.1.6 समाज में अछूतों की स्थिति संबंधी विचार :

भारतीय समाज व्यवस्था में जाति भेद के कारण समाज में चार्तुवर्ण्य व्यवस्था का उदय हुआ है। इसके कारण समाज में असमानता फैल गई है। इस चार्तुवर्ण्य व्यवस्था में से चौथे वर्ग को समाज में अछूत या दलित समझा जाता है। समाज के सवर्ण लोग इन अछूतों के साथ किसी भी प्रकार का व्यवहार नहीं करते थे। इसके कारण ये लोग सामाजिक अधिकारों से वंचित रहे हैं। इन लोगों को अपना जीवन जिने के लिए शारीरिक श्रम करने के सिवा कुछ अन्य साधन उपलव्ध नहीं है। इसी वजह से इन लोगों का सवर्णों दवारा शोषण हो रहा है। इसके कारण अछूतों की स्थिति पशु के समान हो गई है। इनकी दयनीय दशा का वर्णन महाकवि निमेश जी इस प्रकार करते हैं -

"है अछूत पशु से भी वदतर | पशु सम जाति घुमन्तु वे घर ||

धन, धरती, व्यवसाय काम का | हक इनको है नहीं नाम का ||

---

[1]. रामदास निमेश - भीमकथाअमृतम्, पृ. 307

[2]. वही, पृ.17

नंगे रहते रात दिन, सर्दी, गर्मी, वरसात |

विना अन्न अरू दूध के, शिशु भूखे मरिजात ||"[1]

इसके साथ ही स्वतंत्रता पूर्व काल में दलितों में शिक्षा का प्रचार-प्रसार न होने के कारण सरकारी नौकरी में उनकी संख्या वहुत कम थी। इस स्थिति का वर्णन महाकवि ने इस प्रकार किया है।

"आंकड़े तुमको बतलाऊँ | अछूत की स्थिति समझाऊँ ||

मामलातदार है जितने | सौ में दलित कहा हैं कितने ||

सौं में केवल एक बतायें | मालकरी चौतीस लगाये ||

प्रमुख लिपिक दो सौ छयालीसा | इनमें एक दलित ना दीषा ||

वित्त लिपिक दो सहस पाँच सौं | केवल तीस दलित को परचौं ||

पुलिस निरीक्षक तीस पांच सौ | केवल दो हैं, नहीं एक सौ ||

कुछ तैतीस परगनाधीशा | केवल एक दलित ही दीषा ||"[2]

उपर्युक्त कथन के आधार पर कहा जा सकता है कि, महाकवि निमेश जी ने सामाजिक विषमता के कारण दलितों की जो दयनीय स्थिति हुई है इसका वर्णन विवेच्य महाकाव्य में अच्छी तरह से किया है।

5.1.7 नशा-पान संबंधी विचार :

नशा-पान करना आज के युग का एक फैशन वन गया है। इसका प्रभाव सवसे अधिक युवा वर्ग पर दिखाई देता है। युवा वर्ग संगति दोष के कारण नशा पान या व्यसनों के आधिन होता जा रहा है। इसके कारण उनका जीवन बरवाद हो रहा है। नशा-पान करना यह एक ऐसी आदत है कि, उससे छूटकारा पाना संभव नहीं है। महाकवि निमेश जी ने विवेच्य महाकाव्य में प्राचीन काल में यज्ञों के नाम पर किए जानेवाले नशा-पान और पशु बली पर प्रकाश डालते हुए कहा है कि-

"ऊँच नीच का सर्जन करके | गऊ मेध का भक्षण करके ||

---

[1]. रामदास निमेश - भीमकथाअमृतम्, पृ. 136

[2]. वही, पृ. 245

सोम सुरा का पान नशीला | कर्म जाति से जनम कबीला ||

लाखों पशु होने लगे, यज्ञों में बलिदान ||

मेध यज्ञ के नाम पर, मदिरा मास विधान ||"[1]

साथ ही नशा-पान के कारण समाज के लोगों की दशा दयनीय बन गई है। इसका वर्णन महाकवि ने इस प्रकार किया हैं।

"यौनाचार चँहुदिशी संचारी | स्वच्छन्द विचरती वारंगत नारी ||

मद्यप जब जाते वेश्यालय | मदिरा मांस चढ़े देवालय ||

सुरा सुन्दरी भोग सुहावै | विप्र द्युत क्रीडा करबावै ||

आलस घोर अविद्या छायी | मुक्ति पन्थ नहीं पड़े दिखायी ||"[2]

अत: कहा जा सकता है कि, महाकवि निमेश जी ने विवेच्य महाकाव्य में नशा-पान से संबंधी अपने मौलिक विचार स्पष्ट किए हैं।

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि, महाकवि रामदास निमेश जी ने विवेच्य महाकाव्य में सामाजिक विचारों के अंतर्गत समाज में होनेवाली जाति प्रथा, वर्णव्यवस्था, छुआछूत प्रथा, सामाजिक विषमता, नशा-पान तथा भारतीय समाज की नारी की स्थिति से संबंधित विचार प्रस्तुत किए हैं।

5.2 राजनीतिक विचार :

'राज' और 'नीति' इन दो शब्दों से 'राजनीति' यह शब्द बना है। इसके लिए 'Politics' (पोलिटिक्स) यह अंग्रजी शब्द है। 'राजनीति' शब्द की संकल्पना स्पष्ट करते हुए श्री. नवलजी लिखते है, "राज्य की वह नीति जिसके अनुसार प्रजा का शासन तथा पालन और अन्य राज्यों से व्यवहार होता है।"[3] तथा रामचंद्र वर्मा जी लिखते है कि, "वह नीति या पद्धति जिसके अनुसार किसी राज्य का प्रशासन किया जाता या होता है।"[4] 'राजनीति' इस

---

[1]. रामदास निमेश - भीमकथाअमृतम्, पृ. 79

[2] वही, पृ. 80

[3]. संपा.श्री.नवलजी - नालन्दा विशाल शब्दसागर, पृ. 1169

[4] रामचंद्र वर्मा - मानक हिंदी कोश खंड - 4, पृ.494

शब्द से 'राजनीतिक' यह शब्द बना है। इस शब्द की व्युत्पत्ति राजनीति + ठक् + इक इस शब्द से हुई है। जिसका अर्थ है - राजनीति संबंधी।

अत: हम महाकवि निमेश जी के विवेच्य महाकाव्य में वर्णित राजनीतिक विचारों को निम्नलिखित प्रकार से देखते हैं।

5.2.1 राजनीति में दलितों को आरक्षण मिलने संबंधी विचार :

भारत को दि. 15 अगस्त, सन् 1947 ई. को स्वतंत्रता मिली। स्वतंत्रता से पूर्व देश में जाति तथा वर्ण के आधार पर समाज व्यवस्था का निर्माण हुआ था। उस समय वर्णव्यवस्था के आधार पर सवर्ण लोग दलितों पर अत्याचार कर रहे थे। साथ ही सवर्णों ने दलितों को गुलाम बनाया था। उनको किसी भी प्रकार की सुविधा सहज रूप में प्राप्त नहीं होती थी। उसी समय डॉ. अम्बेडकर ने इन दलित लोगों के दु:ख को महसूस करके पहचान लिया था। इसी वजह से डॉ.अम्बेडकर सोचते थे कि, इन दलित लोगों को राजनीति के क्षेत्र में आरक्षण मिलेगा तो उनका विकास हो जाएगा। इसके कारण उन्होंने दलितों को चुनाव व्यवस्था में आरक्षण मिले इसके लिए सबसे पहले कदम उठाया। इसका वर्णन महाकवि निमेश जी इस प्रकार करते हैं -

"सदियों से जो रहे सताये | मानव को जो पशु बताते ||
प्रथक चुनाव व्यवस्था भावै | सीट सुरक्षित आप करावै ||
अपने प्रतिनिधि आप चुनेंगे | तब हमको अधिकार मिलेंगे ||
और नहीं तो पशु समाना | जीवन दुखमय हो विधि नाना ||"[1]

तथा

"जितनी सीट सुरक्षित होगी | अछूत जनता स्वयं चुनेगी ||
एक सीट के प्रतिनिधि तीना | तीनों में से एक प्रवीना ||
हिंदू-दलित जनैं मिल करके | प्रस्ताव संधि दीना लिख करके ||"[2]

---

[1]. रामदास निमेश - भीमकथाअमृतम्, पृ. 173
[2]. वही, पृ.181

उपर्युक्त कथन के आधार पर कहा जा सकता है कि, डॉ.अम्बेडकर ने दलितों को चुनाव व्यवस्था में आरक्षण दिलाने के लिए प्रयास किए थे। इसका वर्णन महाकवि निमेश जी ने मौलिक रूप से किया है।

5.2.2 चुनाव क्षेत्र में व्याप्त भ्रष्टाचार संबंधी विचार:

भारत को स्वतंत्रता मिलने के बाद संविधान का निर्माण किया गया। संविधान में भारत को सार्वभौम लोकतंत्र देश स्वीकार किया है। लोकतंत्र में चुनाव व्यवस्था का स्थान महत्त्वपूर्ण माना जाता है। लोकतंत्र में चुनाव व्यवस्था के अंतर्गत जनता अपने प्रतिनिधि स्वयं चुनती है। इसके कारण राजनेता लोग चुनाव व्यवस्था में जीत प्राप्त करने के लिए पैसों के आधार पर लोगों के वोटों को खरीदते है। इस भ्रष्ट नीति को आधार बनाकर राजनेता लोग चुनाव जितने लगे। इसके कारण चुनाव क्षेत्र में भ्रष्टाचार पनपने लगा। इस भ्रष्ट व्यवस्था का वर्णन महाकवि निमेश जी ने इस प्रकार किया है -

"काँगरेस ने द्रव्य लुटाया | भ्रष्ट मार्ग उसने अपनाया ||
निर्धन जन के वोट खरीदे | लालच देखकर कीने सीधे ||
झौंपड़ पट्टी सुरा लुटाई | कहीं कहीं पर वटी मिठाई ||
और कहीं पर वस्त्र बंटाये | देवदूत जस बनकर आये ||
निम्न वर्ग जन यौं बहकाये | भ्रष्टाचार कहा नहीं जाये ||"[1]

इस प्रकार महाकवि निमेश जी ने राजनीति के क्षेत्र में पनपते हुए भ्रष्टाचार संबंधी विचार प्रस्तुत किए हैं।

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि, महाकवि निमेश जी ने विवेच्य महाकाव्य में राजनीति के क्षेत्र में दलितों को आरक्षण मिलने संबंधी तथा चुनाव में व्याप्त भ्रष्टाचार से संबंधित विचार प्रस्तुत किए हैं।

---

[1]. रामदास निमेश - भीमकथाअमृतम, पृ.345

5.3 धार्मिक विचार :

भारत में धर्म का विशिष्ट स्थान रहा है। 'धर्म' का अर्थ है - धारणा या स्वीकार करना। इसके लिए 'Religion' यह पर्यायवाची शब्द है। इसके आधार पर धर्म का शाब्दिक अर्थ होता है - 'जो धारण किया जाए'। 'धर्म' शब्द की संकल्पना स्पष्ट करते हुए श्यामसुंदरदास जी लिखते हैं कि, "किसी वस्तु या व्यक्ति की वह वृत्ति जो उसमें सदा रहे उससे कभी अलग न हो।"[1] डॉ. राधाकृष्णन धर्म की परिभाषा स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि, "जिन सिद्धांतों का हमें अपने दैनिक जीवन में और सामाजिक संबंधों में पालन करना है वे उस वस्तु द्वारा नियत किए गए है उसे धर्म कहा जाता है "[2]

अत: हम महाकवि निमेश जी के धार्मिक विचारों की जानकारी निम्नलिखित प्रकार से देखते हैं।

5.3.1 जाति विरहित समाज व्यवस्था संबंधी विचार :

सदियों से लेकर आज तक भारतीय समाज व्यवस्था में जाति के आधार पर भेदभाव होते आ रहें हैं। इसी जातिव्यवस्था के कारण ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इन चार वर्णों का निर्माण हुआ है। इसी जातिव्यवस्था के कारण दलितों को अमानवीय अत्याचारों का सामना करना पड़ता था। विवेच्य महाकाव्य के महानायक महार जाति के है। बचपन में वे बाल काटने के लिए नाई के पास जाते हैं। तभी नाई उनका अपमान करता है। इसके आधार पर कहा जा सकता है कि, जातिव्यवस्था उच्च वर्ग के साथ निम्न वर्ग में भी पाई जाती है। इस व्यवस्था का वर्णन महाकवि ने इस प्रकार किया है -

"भीम के केश बढ़े अधिकाय | गये वह नाई के घर आय ||
जानकर शूद्र पुत्र निज द्वार | डॉट कर भीम दिया फटकार ||
कटावे केश यहाँ वदकार | जाति का नीच अछूत महार ||"[3]

---

[1]. श्यामसुंदरदास - हिंदी शब्द सागर भाग - 5, पृ.2436
[2]. राधाकृष्णन अनु. एम.ए.विराज -धर्म और समाज, पृ. 124
[3]. रामदास निमेश - भीमकथाअमृतम, पृ.24

साथ ही जातिव्यवस्था के कारण दलितों को मंदिर में प्रवेश करना मना था। इसको नष्ट करने की सलाह देते हुए महाकवि निमेश जी कहते हैं कि -

"बिना किसी भी भेद के, पूजै सब भगवान |
जाति वर्ग अरू धरम में, नहीं बटा भागवान ||
खोलो बंन्द कपाट दलित को | दो अर्चन अधिकार दलितों को ||"[1]

साथ ही महाकवि निमेश जी धर्म के नाम पर निर्माण हुई इस व्यवस्था को नष्ट करने की बात करते हुए कहतें है कि -

"भोजन वस्त्र को वे जन तरसैं | हो नर अशुचि पुरूष के परसै ||
हम सब इस धरती पर जनमें | लाल खून बहता जन जन में ||
यही सत्य तो ऊच नीच क्यों | नहीं बराबर लखैं विप्र क्यों ||
वामन तन क्या है कंचन का | अशुचि लौह तन का तुम सबका ||
मानव मानव भाई भाई | समझो सार पुरूष तन पाई ||
कोई शत्रु न मीत हमारा | आपस में हो भाई चारा ||"[2]

उपर्युक्त कथन के आधार पर कहा जा सकता है कि, महाकवि निमेश जी ने भारतीय समाज व्यवस्था में धर्म तथा वर्णों पर आधारित जातिव्यवस्था का निर्मूलन करने की बात कही है।

5.3.2 वर्णव्यवस्था संबंधी विचार :

'मनुस्मृति' इस ग्रंथ में वर्णव्यवस्था का प्रतिपादन हुआ है। तब से लेकर आज तक वर्णव्यवस्था का प्रचलन चलता आ रहा है। 'मनुस्मृति' इस ग्रंथ में समाज के सभी लोगों का चार वर्णों में विभाजन किया गया था। यह विभाजन लोगों के द्वारा किए जानेवाले कार्यों के आधार पर हुआ है। इसका वर्णन विवेच्य महाकाव्य में महाकवि ने इस प्रकार किया है-

"तीन सहस्त्र साल से पहले, भारत वैदिक धर्म सनातन था ||
वर्णाश्रम से संयोजित जन, जीवन अनुपम धर्म सनातन था ||

---

[1]. रामदास निमेश - भीमकथाअमृतम, पृ. 113
[2]. वही, पृ. 109

एक पिता के चार पुत्र निज, गुण अनुसार काम अपनाते ॥

रक्षक क्षत्री, शिक्षक पंड़ित, सेवक शूद्र, किसान वैश्य कहाते ॥ "[1]

इसके साथ ही महाकवि निमेश जी ने गोलमेज सम्मेलन में बाबासाहब अम्बेडकर के द्वारा भारत देश में धर्म तथा वर्ग को नष्ट करके एक राष्ट्र बना देने संबंधी विचार इस प्रकार प्रस्तुत किए हैं।

"दृष्टिकोण बाबा का प्यारा | धर्म विहीन राष्ट्र का नारा ॥

सब वर्गों के सुख सुविधा की | दे शक्ति कानून विधा की ॥

वर्ग धर्म रियासत ना कोई | एकहि राष्ट्र बराबर होई। "[2]

इस प्रकार महाकवि निमेश जी ने विवेच्य महाकाव्य में वर्णव्यवस्था संबंधी विचार प्रस्तुत किए हैं।

5.3.3 हिंदू धर्म संबंधी विचार :

विश्व में भारत यह एक ऐसा देश है कि, इसमें अनेक धर्म के लोग रहते हैं। इन धर्मों में हिंदू यह एक धर्म है। इस धर्म में कर्म के आधार पर ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इन वर्णों का निर्माण हुआ है। इसमें से शूद्रों को सबसे हीन समझा जाता था। इसके कारण शूद्र लोगों को स्पर्श करना पाप माना जाता था। महाकवि निमेश जी हिंदू धर्म की इस व्यवस्था के बारे में कहते हैं कि -

"हिंदू धरम नहीं है मेरा | नफरत का जहाँ भरा अंधेरा ॥

कुत्ता बिल्ली पास सुलाओ | कह अछूत जन दूर भगाओ ॥

प्रकृति दत्त जो नीर कहावै। मानव जिसको पी नहीं पावे ॥

खुद्दार दलित क्यों मान करेगा | धरम देश का मान करेगा ॥"[3]

तथा हिंदू धर्म के दर्शन के बारे में महाकवि कहते हैं कि -

"हिंदू दर्शन दूषित भाई | भगवद्गीता रही सुनाई ॥

---

[1]. रामदास निमेश - भीमकथाअमृतम, पृ.79

[2]. वही, पृ. 177

[3] . वही, पृ.151

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR.

सांख्य योग त्रिगुना आधारा | निष्ठुर भाव कपिल विस्तारा ||

इहि समाज सोपान वनाये | जाति वर्ण में लोग वटाये ||

समता न्याय तिरोहीत कीन्हें | हिन तत्त्व मैंने ये चीन्हे || "[1]

इस प्रकार महाकवि निमेश जी ने विवेच्य महाकाव्य में हिंदू धर्म संबंधी अपने मौलिक विचार प्रस्तुत किए है।

5.3.4 बौद्ध धर्म संबंधी विचार :

भारत में ईसवी सन् पूर्व छठी शती में बौद्ध धर्म का उदय हुआ है। इस धर्म के संस्थापक तथागत गौतम बुद्ध है। बौद्ध धर्म के प्रति लगाव होने के कारण डॉ.अम्बेडकर जी ने दि. 14 अक्तूबर, 1956 ई. को बौद्ध धर्म की दीक्षा ली। महाकवि निमेश जी बौद्ध धर्म के बारे में कहते हैं कि -

"जनम करम से श्रेष्ठ वंश था | शाक्य कुल उत्पन्न हंस था ||

विपुल संपदा का जो स्वामी | त्याग संपदा हो वनगामी ||

तप करके बुद्धत्व कमाया | बौद्ध धर्म पुनि पाठ पढ़ाया ||

नूतन मध्यम मार्ग सिखाया | पूर्ण विश्व को ये मत भाया ||

सत्य अहिंसा त्याग तपस्या | आर्य सत्य अरू शील सुविधा ||

ऊँच नीच से रहित था, गौतम बुद्ध का धर्म |

धर्म सनातन शुद्ध कर, उदय किया वुद्ध धर्म ||"[2]

साथ ही बौद्ध धर्म में ईश्वर तथा मुर्तिपूजा आदि को स्थान नहीं था। इसके वारें में महाकवि निमेश जी कहते हैं कि -

"धर्म सदाँ मानव कल्याणी | गूंजी यहाँ वुद्ध की वाणी ||

आज जिसे हम धर्म पुकारे | उसकी कमियाँ आप विचारे ||

इसमें नैतिक मूल्य नहीं है | ईश्वर का स्थान नहीं है ||

मुरतिपूजा प्रमुख कहाये | जिसको जनता धर्म वताये ||

---

[1]. रामदास निमेश - भीमकथाअमृतम, पृ.361

[2]. वही, पृ. 80-81

आत्म मुक्ति ही मूल लक्ष है। मानवीय हित प्रिय परोक्ष हैं ॥"[1]

बौद्ध धर्म में मानव को मानव की तरह जीने का अधिकार है। इस धर्म में जाति तथा वर्ण भेद को कोई स्थान नहीं है। इसके कारण डॉ.अम्बेडकर ने बौद्ध धर्म को अपनाया था। इसके बारे में महाकवि कहते हैं कि -

"सब धर्मों में श्रेष्ठ बताया | विश्वधर्म था ये कहलाया ॥
धर्मग्रंथ नव जाय बनाये | जनहित आवश्यक बतलाये ॥
बौद्ध धर्म की निर्मल धारा | पूज्य आज भी जीवन धारा ॥
पांच मई को बम्बई आये | जनता प्रतिनिधि से बतलाये ॥
बौद्ध धर्म सिद्धांत बताये | सर्वश्रेष्ठ जग में कहलाये ॥
बौद्ध धर्म को मैं अपनाऊ | दलितों को में बौद्ध बनाऊ ॥"[2]

इस प्रकार महाकवि निमेश जी ने बौद्ध धर्म से संबंधित अपने विचार विवेच्य महाकाव्य में प्रस्तुत किए हैं।

5.3.5 सर्वधर्म समभाव संबंधी विचार :

भारत देश में प्राचीन काल से ही अनेक धर्मों का प्रचार-प्रसार होता आया है। उनमें हिंदू, जैन, बौद्ध, इस्लाम, इसाई, शिक्ख, आदि धर्मों का स्थान महत्त्वपूर्ण माना जाता है। महाकवि निमेश जी ने विवेच्य महाकाव्य में सभी धर्मों संबंधी विचार इस प्रकार प्रस्तुत किए हैं-

"गौबा लिखकर तार पढ़ाए | इस्लाम धर्म को प्रिय अपनाये ॥
बिशप बैड़ले राय सुखाई | दलित वन सारे इसाई ॥
बौद्ध सभा संदेश पढ़ाया | तार बनारस से भिजवाया ॥
अम्बेडकर जी स्वागत होगा | बौद्ध धर्म का पहिनो चोंगा ॥
समता, प्यार दया का सागर | यहाँ ऊँच या नीच न नागर ॥
सिक्ख धरम सम धरम नहीं है | भेदभाव का नाम नहीं है ॥

---

[1]. रामदास निमेश - भीमकथाअमृतम, पृ.353
[2]. वही, पृ.331

वावा तुस्सी सिक्ख वनो जी | उपाध्यक्ष दी गल्ल सुनोजी ||

गोल्डन टैम्पल से खत आया | दलीप सिंह ने इसे पढ़ाया ||"[1]

साथ ही हिंदू धर्म में प्रचलित वहुदेववाद के वारे में महाकवि निमेश जी कहते हैं कि -

"भीम विसंगति देखि अनेका | हिन्दुन के है ईश अनेका ||

निराकार को पूजे कोई | ब्रह्मा, विष्णू, महेशहि कोई ||

कोउ गणेश का ध्यान लगावे कोउ दुर्गे को शीश झुकावैं ||

अन्य बहुत से शैव कहावें | वैष्णव कोई शाक्त कहावे ||

एक दूसरे से टकरावे | मानव का वे रक्त बहावे ||"[2]

इस प्रकार महाकवि निमेश जी ने हिंदू धर्म में प्रचलित बहुदेववाद तथा सर्वधर्म समभाव संबंधी विचार प्रस्तुत किए हैं।

5.3.6 आदर्श धर्म संबंधी विचार :

महाकवि निमेश जी ने विवेच्य महाकाव्य में आदर्श धर्म की संकल्पना स्पष्ट करते हुए कहा है कि -

"जितने धर्म जगत रचि राखे जन कल्याणी योगी भाषे ||

प्रथम लक्ष कल्याण मनुज का द्वितीय परस्पर मेल मनुज का ||

तृतीय समाज निरोग वनावे | सुदृढ़ राष्ट्र निर्माण करावै ||

पंचम लक्ष मुक्ति का भायी | समता, प्रेम, ज्ञान सिखलायी ||

ऊँच नीच से रहित समाजा | आदर्श धर्म का यही तकाजा ||

मान वृद्ध नर नारी पाये | योगी संत पूज्य कहलाये ||

मिल समाज को सर्व वनाये | व्यापारी लघु लाभ कमाये ||

उद्योंगो का सफल वनाये | अन्न कृषक जन प्रचुर उगाये |"[3]

---

[1] . रामदास निमेश - भीमकथाअमृतम, पृ.215

[2]. वही, पृ. 363

[3]. वही, पृ.353

इस प्रकार महाकवि निमेश जी ने विवेच्य महाकाव्य में आदर्श धर्म से संबंधित विचार प्रस्तुत किए हैं।

5.3.7 धर्म परिवर्तन संबंधी विचार :

मानव जीवन में धर्म का स्थान महत्त्वपूर्ण माना जाता है। धर्म के आधार पर उसका जीवन सुखी और संपन्न बनता है। धर्म मानव जीवन को सदाचार का मार्ग दिखाता है। इससे उसके आचरण और विचारों में बदलाव आ जाता है। धर्म ऐसी शक्ति है, जो मनुष्य को अपने कर्तव्य का बोध दिलाकर उसे सही रास्ता दिखाता है। लेकिन प्राचीन भारतीय संस्कृति की समाज व्यवस्था में धर्म के नाम पर चार्तुवर्ण्य व्यवस्था का प्रचलन अधिक मात्रा में था। इसके कारण समाज में दलित जाति के लोगों का धर्म तथा जाति के नाम पर शोषण होता रहा है। इस व्यवस्था का निर्मूलन करने के लिए डॉ.अम्बेडकर जी ने धर्म परिवर्तन करने का निश्चय किया था। इसका वर्णन महाकवि निमेश जी इस प्रकार करते हैं -

"हिंदू अब हम नहीं मरेंगे | धर्म शीघ्र प्रिय हम बदलेंगे ||
धरम तुम्हारा तुम्हे सुहावे | हमको तो ये दास बनावें ||
धर्मश्रेष्ठ हम उनको माने | जन जन में अन्तर ना जाने ||"[1]

साथ ही डॉ.अम्बेडकर ने जिस धर्म में मानव के साथ मानव जैसा व्यवहार होता है उस धर्म को अपनाने की बात कही थी। इसका वर्णन महाकवि ने इस प्रकार किया है।

"निर्णय किया नहीं है हमने | हिंदू धरम जा रहे तजने ||
ऐसा धर्म वंधु अपनायें | मानव जहाँ मानव कहलायें ||
और नहीं हिंदू बनि रहना | छुआछूत का पाप न सहना ||"[2]

उपर्युक्त बातों के आधार पर कहा जा सकता है कि, धर्म के नाम पर होनेवाले अमानवीय व्यवहार के कारण दलित जाति के लोगों ने धर्म परिवर्तन करने का निर्णय लिया था। इसका वर्णन विवेच्य महाकाव्य में महाकवि निमेश जी ने बहुत सुंदर ढंग से किया है।

---

[1]. रामदास निमेश - भीमकथाअमृतम, पृ.215
[2]. वही, पृ.204

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि, महाकवि निमेश जी ने विवेच्य महाकाव्य में धर्म के नाम पर आधारित जातिव्यवस्था और छुआछूत प्रथा से संबंधी अपने मौलिक विचार प्रस्तुत किए हैं। साथ ही उन्होंने हिंदू धर्म, बौद्ध धर्म और सर्वधर्म समभाव से संबंधित विचारों को हमारे सामने प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया है।

5.4 आर्थिक विचार :

आधुनिक युग में आदमी से भी बढ़कर 'अर्थ' इस चीज को महत्त्व दिया जा रहा है। 'अर्थ' इस शब्द को धन, पैसा आदि समान अर्थ वाले शब्द है। अर्थ पर ही हमारी समाज व्यवस्था टिकी है। अर्थ व्यवस्था पर देश तथा देश में रहनेवाले सभी लोगों का विकास होता है। अर्थ के बारे में डॉ.ओमप्रकाश सारस्वत जी कहते है कि, "अर्थ समाज की शिराओं में बहनेवाला वह रक्त है जिसके द्वारा समाज की सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक चेतना स्वस्थ रही है।"[1] इसके आधार पर कहा जा सकता है कि, व्यक्ति की सामाजिक प्रतिष्ठा का निर्णय उसकी आर्थिक स्थिति पर ही निश्चित किया जा सकता है।

अत: हम महाकवि निमेश जी के द्वारा वर्णित आर्थिक विचारों को निम्नलिखित प्रकार से देखते हैं।

5.4.1 अर्थ संबंधी विचार :

आज के वैज्ञानिक युग में हर व्यक्ति अर्थ या पैसों के पिछे लगा हुआ है। पैसा यह आज जीवन का अनिवार्य हिस्सा वन गया है। इसके कारण हर व्यक्ति पैसों का संचयन करने में व्यस्त रहा है। जिस व्यक्ति के पास बहुत सारा धन है वह व्यक्ति धन के वल पर अनेक प्रकार के कार्य करता है। इसका वर्णन महाकवि निमेश जी ने इस प्रकार किया है।

"नूतन वावा कदम उठाये | कांगरेस जन लखि घवराये ||
धन की शक्ति श्रेष्ठ कहाये | धन से पुरूष खरीदे जायें ||
धन से लोग गुलाम वनाये | धनहित नारी रूप सजाये ||
धनहित जन ईमान गवाये | धन ही मित्र घात करवाये ||

---

[1]. डॉ. ओमप्रकाश सारस्वत - बदलते मूल्य और आधुनिक हिंदी नाटक, पृ. 190

धनहित सुता प्राण से प्यारी | बेचै नीच पुरूष व्याभिचारी ||

धन ही जग में सुख की जननी | निज सुख हेतु कामिनी करनी ||

करते आये लोग सदा से | समरथ करते पाप सदा से ||

कांगरेस ने धनबल बूते | सभी चुनाव देश में जीते ||"[1]

उपर्युक्त कथन के आधार पर कहा जा सकता है कि, महाकवि निमेश जी ने विवेच्य महाकाव्य में धन की महत्ता को सबसे श्रेष्ठ स्वीकार किया है। तथा धन के बल पर किए जाने वाले कार्यों का विवेचन किया है।

5.4.2 मिल मजदूरों संबंधी विचार :

भारतीय समाज व्यवस्था में मजदूर लोगों के पास अर्थ प्राप्ति के लिए शारीरिक श्रम करने के सिवा कोई अन्य साधन उपलब्ध नहीं है। इसके कारण ये मजदूर लोग दूसरों के मिल या कारखानों में दिन रात ईमानदारी के साथ मेहनत मजदूरी करते हैं। लेकिन वहाँ पर इन मजदूरों का मिल मालिकों दवारा शोषण होता रहता है। ये मजदूर लोग मिल में कमरतोड़ परिश्रम करते हैं, लेकिन उनको मालिक कम मात्रा में मजदूरी देते है। इस मजदूरी से वे दो वक्त की रोटी भी जूटा नहीं पाते। मजदूरों की इस स्थिति का वर्णन महाकवि इस प्रकार करते हैं -

"इस अवसर पर मजदूरों की, वह दशा देख दुख पाते थे ||

निश्चित नहीं काम के घन्टे, वेतन थोड़ा पाते थे |

मिल मालिक मजदूरों से, वेगार अधिक करवाते थे ||"[2]

साथ ही महाकवि निमेश जी मजदूरों के प्रति अपने दृष्टिकोण के वारे में कहते है कि-

"श्रमिक लोग अवकाश करें जो | उसका वेतन मिले सभी को ||

मिल उद्योग फैक्टरी सारी | विधिवत् कीन्ह व्यवस्था जारी ||

श्रमिक वर्ग अरूदीन किसानू | छुत अछूत नहीं मैं मानू ||

---

[1]. रामदास निमेश - भीमकथाअमृतम, पृ.235

[2]. वही, पृ. 28

जनहित है उद्देश हमारा | भारत है प्राणों से प्यारा ||"[1]

इस प्रकार महाकवि निमेश जी ने मिल मजदूरों की स्थिति से संबंधित विचार प्रस्तुत किए है।

5.4.3 खेती मजदूरों संबंधी विचार :

भारत कृषि प्रधान देश है। इसी कारण देश की समाज व्यवस्था तथा अर्थ व्यवस्था खेती पर निर्भर है। हमारे देश के सत्तर प्रतिशत लोग खेती करते हैं। इसके कारण खेती यह अर्थ प्राप्ति का मूल साधन है। समाज के अनेक लोग अर्थ प्राप्ति के लिए खेती पर मेहनत मजदूरी करके अपना जीवन बिताते हैं। लेकिन जो खेती के मालिक या जमींदार लोग है, वे इन मजदूर लोगों का आर्थिक स्थर पर शोषण करते है। इसका वर्णन महाकवि निमेश जी इस प्रकार करते हैं -

"कौंकण कोठी प्रथा दुखारी | भूमि व्यवस्था कुँवर बिचारी ||
जमींदार शोषक हैं हमारे | घृणित श्रमिक दास है सारे ||
निशि दिन अपनी देह गलावै | किन्तु पेट भर अन्न न पावें।
नंगेतन दिन शीत में काटै | दु:ख में मालिक दु:ख न वाटैं ||
घोर दुर्दशा खेत श्रमिक की | निर्दयता की हद मालिक की ||"[2]

इन मजदूरों की स्थिति में सुधार लाने के लिए इनको सभी प्रकार की सुविधा मिले इसके लिए कानून वनाने की सलाह देते हुए महाकवि कहते हैं कि -

"जनता आम प्रगति करि पाये | भूमिहिन को भूमि दिलायें ||
मजदूरों को काम दिलाये | भोजन वस्त्र सभी जन पाये ||
अन्य लोग जिनको वतलाये | उनके हित कानून वनाये ||
विशेष योजना जाय वनाई | निश्चित धन दे सफल वनाई ||"[3]

---

[1]. रामदास निमेश - भीमकथाअमृतम, पृ.270
[2]. वही, पृ. 119
[3]. वही, पृ.351

इस प्रकार महाकवि निमेश जी ने खेती में दिन-रात काम करनेवाले खेती मजदूरों की स्थिति का वर्णन विवेच्य महाकाव्य में अच्छी तरह से किया है।

निष्कर्षत: हम कह सकते है कि, विवेच्य महाकाव्य में महाकवि निमेश जी ने अर्थ के वल पर किए जाने वाले कार्यों का वर्णन किया है। तथा पैसा कमाने के लिए दिन-रात मिल या खेती में काम करनेवाले मजदूरों की स्थिति का वर्णन किया है।

5.5 शैक्षिक विचार :

मनुष्य के जीवन में शिक्षा का स्थान महत्त्वपूर्ण माना जाता है। मनुष्य शिक्षा के सहारे अपने जीवन में अनेक प्रकार के परिवर्तन ला सकता है। शिक्षा के माध्यम से समाज तथा राष्ट्र की उन्नति होती है। अत: हम 'शिक्षा' इस शब्द का अर्थ निम्नलिखित प्रकार से देखते है।

1. श्री नवलजी के अनुसार 'शिक्षा' शब्द का अर्थ है - "1.विद्या पढ़ने अथवा कला सीखने की क्रिया। तालीम। 2. उपदेश नसीहत। 3.एक वेदांग जिसमें वेदों के वर्णों, स्वरों, मात्राओं आदि का विवेचन है। 4. पाठ | सबक | 5. परामर्श सलाह | 6. शासन, दबाव।"[1]
2. रामचंद्र वर्मा के अनुसार 'शिक्षा' शब्द का अर्थ है, "किसी प्रकार का ज्ञान या विद्या प्राप्त करने के लिए सीखने-सिखाने का क्रम / तालीम |"[2]
3. शिक्षा इस शब्द के लिए अंग्रेजी में 'Education' यह शब्द है। डॉ.के.के. जाधव जी ने शिक्षा शब्द की संकल्पना निम्नलिखित प्रकार से स्पष्ट की है -

"1. Educare – To rear
   - To Nourish
   - To bring up
   - To raise
2. Educere – To Lead out
   - To Draw out

---

[1]. श्री. नवलजी - नालन्दा विशाल शब्दसागर, पृ.1340
[2]. रामचंद्र वर्मा - मानक हिंदी कोश, पाँचवा खंड, पृ.168

3. Educatun – The art of teaching ortraining

- Inspiration"[1]

इस प्रकार अनेक विद्वानों ने 'शिक्षा' इस शब्द से संबंधित अपने मत प्रस्तुत किए हैं।

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि, शिक्षा मानव के जीवन में निरंतर चलनेवाली प्रक्रिया है। तथा वह जन्म से लेकर मृत्यु तक निरंतर रूप से प्रवाहित होनेवाली अखंड़ित धारा है। 'शिक्षा' इस शब्द को 'इक' प्रत्यय लगने से 'शैक्षिक' यह शब्द बनता है। जिसका अर्थ है - शिक्षा विषय को जाननेवाला या शिक्षा का ज्ञाता।

अत: हम महाकवि निमेश जी के शैक्षिक विचारों की जानकारी निम्नलिखित प्रकार से देखते हैं।

5.5.1 दलितों को शिक्षाधिकार मिलने संबंधी विचार :

भारत देश में प्राचीन काल से ही शिक्षा लेने का अधिकार सिर्फ सवर्ण लोगों को था। आधुनिक काल में दलितों को शिक्षा के साधन उपलब्ध हो इसके लिए महात्मा फुले, शाहू महाराज और डॉ. अम्बेडकर आदि महामानवों ने अनेक प्रयास किए थे। डॉ. अम्बेडकर ने दलितों के लिए शिक्षा सहज रूप से मिले इसके लिए 'पिपल एज्यूकेशन शिक्षा संस्था' का निर्माण किया था। इसका वर्णन महाकवि निमेश जी ने विवेच्य महाकाव्य में इस प्रकार किया है -

"संस्थान आदर्श बनाया | मध्यवर्ग अनुसूचित हित जाना ||
बुनियादी पत्थर रखवाया | प्यूयल शिक्षा संस्थान वनाया ||
वीस जून छयालीसा सुहानी | कालिज की रचना करि आनी ||
आधार शिला रख के किया, कुँवर स्वपन साकार |
सिद्धार्थ नाम देकर उसे, पाया हर्ष अपार || "[2]

इसके साथ ही महाकवि निमेश जी शिक्षा के क्षेत्र में समानता प्रस्थापित करने की वात कहते हैं। जैसे -

---

[1]. डॉ.के.के. जाधव - नवीन काळाचे शिक्षण, पृ.7-8
[2]. रामदास निमेश - भीमकथाअमृतम्, पृ. 280-281

"ऊँची शिक्षा सुलभ कराओ | पिछड़े वर्गों तक पहुँचाओं ||
शिक्षा का आधार हो श्रीमान | इस समाज का ऊँच नीच पन ||
निम्न वर्ग को मिले रियासत | है अज्ञान अविद्या लानत ||
यदि हो समता का शिक्षा स्तर | दलित कभी ना होगा वेहतर ||"[1]

उपर्युक्त बातों के आधार पर कहा जा सकता है कि, महाकवि निमेश जी ने दलितों को सुलभ तथा सहज रूप में शिक्षा मिले इसके लिए डॉ.अम्बेडकर के द्वारा किए प्रयासों का वर्णन विवेच्य महाकाव्य में अच्छी तरह से किया है।

5.5.2 नारी शिक्षा संबंधी विचार :

भारतीय संस्कृति में नारी की सदियों से उपेक्षा होती रही है। उसका कार्यक्षेत्र सिर्फ घर गृहस्थी तक सीमित रहा है। इसके कारण वह शिक्षा से वंचित रही है। शिक्षा यह एक ऐसी प्रक्रिया है इसके माध्यम से व्यक्ति का शारीरिक, मानसिक तथा बौद्धिक विकास होता है। इसी कारण हर व्यक्ति को शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए। लेकिन मनु कालीन व्यवस्था में दलितों और नारी को शिक्षा ग्रहण करना अपराध माना जाता था। इस व्यवस्था का वर्णन महाकवि निमेश जी इस प्रकार करते है -

"मनु ने ऐसी नीति बनाई | भारत की जनता भरमाई ||
शिक्षा ज्ञान शूद्र को वर्जित | नारी करै न शिक्षा अर्जित ||"[2]

साथ ही महाकवि निमेश जी कहते है कि -

"शिक्षा एक हमारी मानो | विद्या की कीमत पहचानो ||
शिक्षित हो संतान तुम्हारी | जीवन पथ हो सुगम अगारी ||
बेटी जो शिक्षित हो जाए | दलित वर्ग में व्याह रचायें ||
तथा कथित जो उच्च कहाये | पति उनको ना कभी वनाये ||
शिक्षित हो परिवार सुधारें | संस्कार शुचि आप विचारें ||

---

[1]. रामदास निमेश- भीमकथाअमृतम, पृ.108
[2]. वही, पृ. 10

उत्तम हौं आचरण तुम्हारे | मिट जायें सब कष्ट तुम्हारें ॥ "[1]

इस प्रकार महाकवि निमेश जी का कहना है कि, नारी को मान मर्यादा और शिक्षा मिलेगी तभी ही राष्ट्र की उन्नति होगी। नारी को शिक्षा मिलने से वह अपने पैरों पर खड़ी रहकर अपने परिवार के सभी लोगों का विकास करती है।

5.5.3 शिक्षा में क्रांतिकारी परिवर्तन संबंधी विचार :

शिक्षा यह ऐसा साधन है कि, जिसके माध्यम से व्यक्ति, समाज, राष्ट्र, देश तथा पूरे विश्व की प्रगति होती है। इसके कारण समाज के सभी युवा-युवतियों को शिक्षित बनकर संघठित होकर संघर्ष करना चाहिए। शिक्षा के माध्यम से आत्मसम्मान बढ़ता है। इसके कारण डॉ.अम्बेडकर ने अपने दलित बंधुओं को शिक्षा अर्जित करने का मंत्र दिया है। प्राचीन काल में दलितों को पढ़ने के कोई साधन उपलब्ध नहीं थे। लेकिन आधुनिक काल में शाहू महाराज और महात्मा फुले जी ने दलितों के लिए शिक्षा के दवारा खोल दिए थे। इसका वर्णन महाकवि निमेश जी इस प्रकार करते हैं -

"कोल्हापुर के शाहू छत्रपति | हुए प्रभावित फुले से अति ॥
ज्योतिर्वा का पथ अपनाया | अछूत शिक्षा संकल्प बनाया ॥
शूद्र, अछूत, मुसलमां भाई | विद्यालय अब पढ़ने जाई ॥
छात्रावास अनेक वनाये | पिछड़ी जाति के वाल पढ़ाये ॥"[2]

इसके साथ ही डॉ. अम्वेडकर जी ने शिक्षा के क्षेत्र में छात्रों को तकनीकी शिक्षा, वैज्ञानिक शिक्षा और औद्योगिक शिक्षा दिलाने की वात कही है। इस प्रकार की शिक्षा के कारण छात्रों का तथा देश का विकास हो सकता है। इस स्थिति का वर्णन महाकवि निमेश जी ने इस प्रकार किया है -

"लेवर कोड़ वने स्थायी | शिक्षा पद्धति नयी सुझायी ॥
जिसमें हो तकनीकी शिक्षा | वैज्ञानिक, औद्योगिक शिक्षा ॥
मैंने ऐसी नीति वनाई | प्रगति करै नर नारी सवाई ॥

---

[1]. रामदास निमेश- भीमकथाअमृतम, पृ. 266
[2]. वही, पृ. 65

विविध क्षेत्र जीवन के प्यारे | उदीयवान हौं युवक हमारे ||"[1]

महाकवि निमेश जी का मत है कि, शिक्षा के क्षेत्र में दलित छात्रों को सभी प्रकार की सुविधाएँ मिलनी चाहिए। और उन्हें सरकारी नौकरी के अवसर प्राप्त होने चाहिए। इसका वर्णन महाकवि इस प्रकार करते है -

"सुधारवादी कदम सुझाये । बाबा जू ने लिख बतलाये ||
शिक्षा मुफ्त उन्हें दिलवाये | छात्रवृत्ति भी इन्हें दिलाये ||
शिक्षित दलित युवक हो जाये | तुरंत नौकरी उन्हें दिलाये ||
भारतीय सेवा में भरती | शिक्षित दलित दीनता हरती ||"[2]

उपर्युक्त बातों के आधार पर कहा जा सकता है कि, महाकवि निमेश जी ने विवेच्य महाकाव्य में विभिन्न समाज सुधारकों के द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने का कार्य किया है इसका वर्णन सुंदर ढंग से किया है।

5.5.4 शिक्षा मुक्ति का मार्ग है :

शिक्षा के माध्यम से ही हर व्यक्ति का जीवन परिपूर्ण तथा सफल बनता है। इसके साथ ही शिक्षा से व्यक्ति गतिशील, सभ्य तथा सुसंस्कृत बनता है। डॉ.ईश्वर दयाल गुप्त जी शिक्षा के बारे में कहते है कि, "वास्तव में शिक्षा एक आलोक है, जो व्यक्ति को हर दिशा से घेरनेवाले परिवेश को प्रकाशित करके व्यक्ति को भटकने से बचा सकता है।"[3] साथ ही शिक्षा के माध्यम से समाज में क्रांति निर्माण हो सकती है। इसके कारण सभी व्यक्तियों को शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए। इसके वारे में महाकवि निमेश जी कहते हैं कि-

"छात्रों को संदेश सुनाया | मधुर प्रभावी मत दरशाया ||
विद्या ही बुद्धि आगारा | बुद्धि चलाये जीवन धारा ||
बुद्धि ज्ञान जहाँ ना होई | दिन में रात वहाँ पर होई ||
शुचि चिंतन पथ सुगम बनाये | प्रज्ञावान न दु:ख उठावे ||

---

[1]. रामदास निमेश - भीमकथाअमृतम्, पृ. 274
[2]. वही, पृ. 352
[3]. डॉ.ईश्वर दयाल गुप्त - आधुनिक भारतीय शिक्षा : समस्या चिंतन, पृ.59

वनो उच्च ज्ञानी विज्ञानी | उन्नत जीवन मिटे गिलानी ||"[1]

इसके साथ ही शिक्षा के माध्यम से हर व्यक्ति का जीवन सुखी वनता है। इसका वर्णन महाकवि निमेश जी ने इस प्रकार किया है -

"हमें देश प्राणों से प्यारा | शिक्षा हो उन्नति आधारा ||
शिक्षा औषध वस्त्र जुटाओ | हर शिशु को नर श्रेष्ठ बनाओं ||
पय बिन शिशु ना प्रान गवाये | हर नर नारी भोजन पाये ||
अपने से नीचे प्रिय देखो | दीन हीन मनुष्य को देखो ||
आप सबल अरू शक्तिवान हैं। शिक्षित बहुतक ज्ञानवान हैं ||"[2]

इस प्रकार शिक्षा ग्रहण करने से मनुष्य का जीवन विकसित बनता है। तथा वह आत्मनिर्भर बन जाता है। शिक्षा के माध्यम से मनुष्य का जीवन प्रकाशमय बनता है। इसके कारण महाकवि निमेश जी शिक्षा को मुक्ति का मार्ग कहते हैं।

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि, विवेच्य महाकाव्य में महाकवि निमेश जी ने शैक्षिक विचारों के अंतर्गत दलितों को शिक्षाधिकार मिलने संबंधी तथा नारी शिक्षा संबंधी विचारों का विश्लेषण किया है। साथ ही विभिन्न समाज सेवी लोगों जैसे महात्मा फुले, शाहू महाराज, डॉ.अम्वेडकर आदि के द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने का कार्य किया है, इसका विवेचन महाकवि निमेश जी ने अच्छी तरह से किया है।

समन्वित निष्कर्ष :

'भीमकथाअमृतम्' काव्य का वैचारिक पक्ष इस अध्याय का विवेचन-विश्लेषण करने के पश्चात कहा जा सकता है कि, महाकवि निमेश जी ने विवेच्य महाकाव्य में सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक और शैक्षिक विचारों पर प्रकाश डाला है।

महाकवि निमेश जी ने विवेच्य महाकाव्य में सामाजिक विचारों के अंतर्गत जातिव्यवस्था, वर्णव्यवस्था, छुआछूत प्रथा, सामाजिक विषमता, अछूतों कि स्थिति, नारी संवंधी विचार आदि वातों का वर्णन किया है। जातिव्यवस्था, वर्णव्यवस्था, छुआछूत प्रथा के

---

[1]. रामदास निमेश - भीमकथाअमृतम्, पृ. 349
[2] . वही, पृ.303

कारण समाज में दलितों का शोषण होता रहा है। इसके कारण समाज में उच्च-नीच भेदभाव का निर्माण हुआ है। इसी वजह से समाज में विषमता की स्थिति पनप गई है। साथ ही महाकवि निमेश जी ने पुरूष प्रधान संस्कृति के कारण नारी पर होनेवाले अन्याय अत्याचारों पर प्रकाश डाला है।

राजनीतिक विचारों के अंतर्गत महाकवि निमेश जी ने भारत देश में स्थित राजनीति में दलितों की स्थिति का विश्लेषण किया है। इसके साथ ही डॉ.अम्बेडकर ने दलितों को राजनीति के क्षेत्र में आरक्षण दिलाने के प्रयास किए है, इसका वर्णन किया है। तथा चुनाव के क्षेत्र में व्याप्त भ्रष्टाचार से संबंधित मौलिक विचारों का अंकन किया है।

धार्मिक विचारों के अंतर्गत महाकवि निमेश जी ने धर्म के नाम पर पनप रही जातिव्यवस्था, वर्णव्यवस्था आदि से संबंधित विचार प्रस्तुत किए हैं। हिंदू धर्म में दलितों पर होनेवाले अन्याय अत्याचारों का यथार्थ रूप में अंकन किया है। साथ ही बौद्ध धर्म के सर्वधर्म समभाव के सिद्धांत से संबंधित विचार प्रस्तुत किए है। तथा महाकवि ने धर्म परिवर्तन से संबंधित विचारों का अंकन विवेच्य महाकाव्य में किया है।

आर्थिक विचारों के अंतर्गत महाकवि निमेश जी ने दलितों की आर्थिक विपन्नता का वर्णन किया है। तथा दलितों के द्वारा किए जानेवाले परिश्रम का चित्रण किया है। इसके साथ ही मिल और खेती मजदूरों की स्थिति का विश्लेषण विवेच्य महाकाव्य में किया है।

शैक्षिक विचारों के अंतर्गत महाकवि निमेश जी ने दलितों और नारी शिक्षा संबंधी विचारों का विश्लेषण किया है। शिक्षा के माध्यम से सामान्य जनता तथा दलितों का विकास होता है। इसके कारण सभी को शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए। शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति, परिवार, देश तथा राष्ट्र का विकास होता है। इसके कारण सभी को शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए। साथ ही शिक्षा में क्रांतिकारी परिवर्तन होने चाहिए ऐसा महाकवि निमेश जी का मत है।

इस प्रकार विवेच्य महाकाव्य में महाकवि रामदास निमेश जी ने वैचारिक पक्ष के

अंतर्गत सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक, शैक्षिक आदि विचारों का विवेचन तथा विश्लेषण किया है। ये सभी विचार प्रगतिशील है। इनमें प्रगतिशीलता की प्रासंगिकता है। तथा इन विचारों के माध्यम से नव भारत निर्माण की शक्ति और नई पीढ़ी का निर्माण किया जा सकता है। ये सभी विचार विज्ञाननिष्ठ है। इन सभी विचारों के आधार पर सन् **2020** ई. को भारत देश का स्थान विश्व में एक महासत्ता तथा स्वयम् पूर्ण देश के रूप में महत्त्वपूर्ण वन सकता है। साथ ही इन विचारों के आधार पर जाति तथा धर्म विरहित समाज व्यवस्था की स्थापना की जा सकती है।